जंगल में वारदात

दिलीप चिंचालकर

गाँव वैसे ही सड़क से पौने दो मील अन्दर था। फिर ठाकुर साहब की गढ़ी गाँव के दूसरे छोर पर थी। बगल से बगड़ी नदी बहती थी। इतने पास से कि रात या दोपहर के सन्नाटे में उसकी कल-कल गढ़ी के बुर्ज पर सुनाई देती थी। दोपहर के खाली समय में पुस्तक पढ़ने के लिए बुर्ज सबसे अच्छी जगह थी। यूँ तो मैं पूरा दिन खाली ही रहता। शहर की चकाचौंध से दूर इस खेड़े में साल में दो बार मैं तारों भरा आसमान देखने के लिए यहाँ आता रहा हूँ।

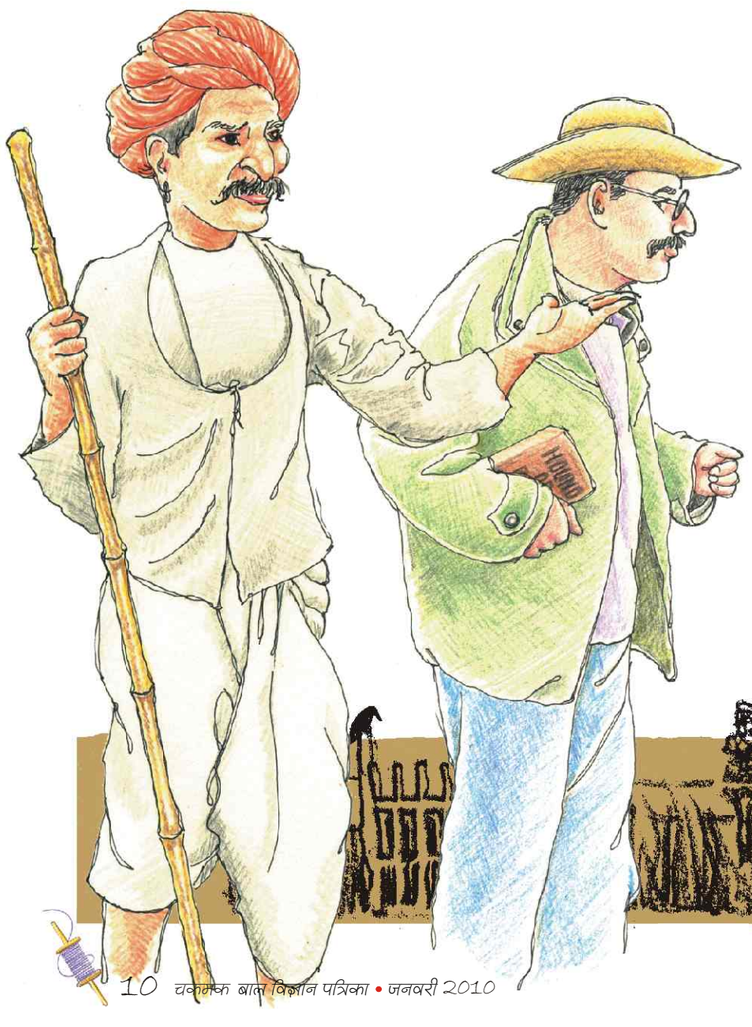

सुबह का समय नदी और खलिहान पार कर खेत, पहाड़ी और झाड़ियाँ घूमने-घामने का होता। ठाकुर साहब की ज़मीन इतनी बड़ी थी कि यह सब उसी में था। फिर गाँव में सबसे राम-राम-श्याम-श्याम होने से किसी भी खेत में चना-मटर खाने पर रोक नहीं थी। चना-मटर तो बाद में आता। झाड़ियों में लगी बेरियाँ, करोंदे, बेर, बन्दर रोटी खाते-खाते मन ही न भरता। तरह-तरह के जंगली फूल, कीट-पंतगे, मधुमक्खियाँ देखते हुए सूरज सिर पर आ जाता। तब ठाकुर साहब का हरकारा छतरसिंह खाने का बुलौआ लेकर किसी पेड़ के पीछे से नमूदार होता।

पिछली रात हल्का-सा मावठा गिरा था, यानी जाड़े की बारिश। नींद नहीं आ रही थी इसलिए बुर्ज में बैठकर मैं किताब पढ़ रहा था। गढ़ी के वातावरण में शर्लाक होम्स का जासूसी उपन्यास पढ़ना मुझे बहुत पसन्द है। खास तौर पर उसकी "हाउण्ड ऑफ बास्कर विल" वाली घटना। यह सन् 1742 की स्कॉटलैण्ड के दलदली मैदानों की घटना है। इन मैदानों को मूर कहते हैं। रात के अँधेरे में कहीं से एक दैत्याकार कुत्ता आ निकलता है जो भूले-भटके राहगीरों का शिकार करता है। वैसे भी सबूतों का विश्लेषण करने का होम्स का तरीका मुझे सुहाता है। कई बार सुबह छतरसिंह के साथ खेतों की तरफ निकल जाने का मौका मिल जाता। तब मैं चौड़ी पाती का हैट पहनकर कल्पना करता जैसे मैं खुद शर्लाक होम्स हूँ। झाड़ियों की पत्तियाँ और मरी हुई तितलियाँ इस अन्दाज़ से किताब के पन्नों के बीच रखता जाता गोया वे मौका-ए-वारदात से बरामद महत्वपूर्ण सुराग हों।

करंज के पेड़ के नीचे मुझे तीन खूबसूरत काले-ताम्बई रंग के पंख मिले। मैंने उन्हें यूँ ही उठा लिया था। तीनों को पास-पास रखकर अच्छा कम्पोज़िशन बनता है इसलिए। यह देखकर छतरसिंह ने कहा, "शिकारी भी कभी-कभी शिकार बन जाता है।"

"मैं समझा नहीं।"

"ये पंख महोका के हैं। लगता है बिलाव उसे मारकर खा गया।"

महोका या कूकल जिसे अँग्रेज़ी में क्रो-फीजंट कहते हैं, कौए से थोड़ा बड़े आकार का होता है। पक्षी होकर भी यह खेत के चूहे, छोटे जीव और चिड़ियों का शिकार कर खाता है।

"यह तुम्हें कैसे पता चला?"

"साब, इसलिए कि ये पंख झड़ने का मौसम नहीं है। लगता है किसी ज़ोर-ज़बरदस्ती में टूटे हैं ये।"

बात तो ठीक थी। बसन्त में या गर्मियों में पक्षियों के पंख झरते हैं। जाड़े की शुरुआत में बिलकुल नहीं। टूटे हुए पंखों की नोक पर खून की लाली थी। झरे हुए पंखों-सा साफ-सुथरापन उनमें नहीं था।

अब मुझे इसमें रहस्य कथा की गंध आने लगी। छतरसिंह को उकसाया तो वह खुलासेवार बताने लगा। "महोका का ये जोड़ा पहले परली तरफ के महुए पर बैठता था। जोड़ा टूट गया तो यह नर यहाँ करंज पर बैठने लगा।" डाल के ठीक नीचे गिरी बीट बता रही थी कि बीती रात भी वह यहीं बैठा था। डाली पर बैठकर सोने वाले पक्षी नींद में नीचे नहीं गिरते। डाली पर उनके पंजों की पकड़ तभी खुलती है जब वे पंख पसारते हैं।

"और जंगली बिलाव की बात?"

"वो तो दो-तीन दिन से यहीं डोलते दिखा था।" छतरसिंह ने बताया फसल कटे काफी समय हो गया। "चूहा-चबैना कुछ नहीं है सो बिलाव ने महोका पर दाँव लगाया। ये देखो उसी के पंजे के निशान हैं।"

जब तक महोका महुए के ऊँचे पेड़ पर बैठता था, बिल्ली की पहुँच से बाहर था। करंज के छोटे पेड़ पर बैठे महोका को पकड़ना उसके लिए आसान रहा होगा।

आसपास घूमकर तफ्तीश की तो महोका के खून से सने अवशेष मिले। छोटे-छोटे लाल चींटे उन पर चिपके हुए थे। काफी हिस्से वे वहाँ से ले जा चुके थे। मेरे कौतूहल को देखकर छतरसिंह ने बताया कि जंगल में रात भर ऐसी ही रोमांचक घटनाएँ चलती रहती हैं। सुबह जल्दी इधर आ निकलो तो उनके सबूत मिल जाएँगे। दिन चढ़ आने के बाद कुछ भी पता नहीं चलता। मेरे जैसा दूरबीन से चिड़ियाँ देखने वाला शहरी आदमी यही कयास लगाता कि महोका जाड़े के प्रवास पर दक्षिण की ओर

दक्षिण की ओर निकल गया होगा।

मक्तूल की लाश, कत्ल का हथियार और मक्सद सब साफ था। एक सनसनीखेज वारदात की जाँच मिनिटों में पूरी हो गई थी। मैं चकित होकर छतरसिंह की ओर देखने लगा। झबरीली मूँछों के नीचे से उसकी देहाती मुस्कुराहट कह रही थी- एलिमेंटरी माई डियर वॉटसन। (यानी सीधी-सी बात है साब जी)

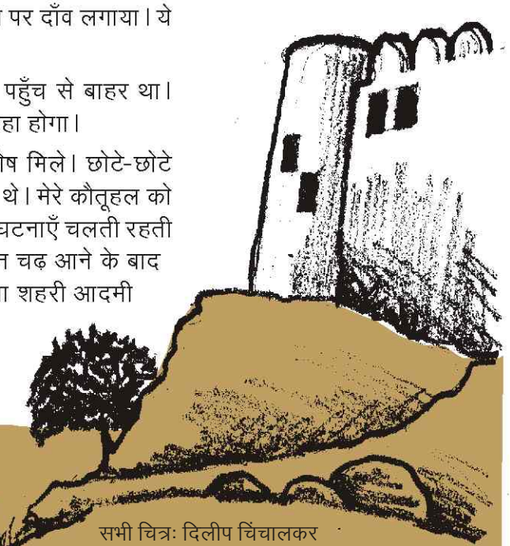

सभी चित्रः दिलीप चिंचालकर